पाठ - 3
लिबास की सुन्नतें और उसके शिष्टाचार

الدرس الثالث - هندي
من سنن اللباس وآدابه

एक मुसलमान को लिबास के मामले में सुन्नतों पर भी अमल करना चाहिए। उनमे से एक यह है कि नया कपड़ा पहनते समय दुआ पढ़ी जाए। इसकी दलील अबू सईद खुदरी रजियल्लाहु अन्हु की रिवायत है। वे बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब कोई नया कपड़ा पहनते तो उसका नाम लेते चाहे वह कमीस होती या अमामा, फिर यह दुआ पढ़ते.

اللَّهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ كَسَوْتَنِيهِ أَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِهِ وَخَيْرِ مَا صُنِعَ لَهُ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهِ، وَشَرِّ مَا صُنِعَ لَهُ

अल्लाहुम्म लकल हम्द अन्त कसौतनीहि अस्अलुक मिन खैरिही व खैरि मा सुनिअ लहु वअअुजुबिक मिन शररीही व शररी मा सुनिअ लहु. ऐ अल्लाह! सारी प्रशंसाएं तेरे ही लिए हैं। तुझ ही ने मुझे यह लिबास पहनाया, मैं तुझ से इसकी भलाई और जिसके लिए इसे बनाया गया है उसकी भलाई का सवाल करता हूं और मैं इसकी बुराई से और जिसके लिए इसे बनाया गया है उसकी बुराई से तेरी पनाह चाहता हूं। (अबु दाऊद 4020)

दायीं तरफ़ से कपड़ा पहनना सुन्नत है। इसकी दलील आइशा रजियल्लाहु अन्हाकी यह रिवायत है

كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُحِبُّ التَّيَمُّنَ مَا اسْتَطَاعَ فِي شَأْنِهِ كُلِّهِ، فِي طُهُورِهِ وَتَرَجُّلِهِ وَتَنَعُّلِهِ

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने हर काम को दायीं तरफ से शुरु करने को पसन्द करते थे। चाहे वह वुज़ू करने का मामला हो या कंघी करने का या जूता पहनने का। (बुखारी . 268)

इसी प्रकार जब जूते पहनते तो दायीं ओर से शुरु करते और जूते उतारते समय बायीं तरफ़ का जूता उतारते फिर दायीं तरफ़ का। इसकी दलील हज़रत अबु हुरैरह रजियल्लाहु अन्हु की रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

إِذَا انْتَعَلَ أَحَدُكُمْ فَلْيَبْدَأْ بِالْيُمْنَى، وَإِذَا خَلَعَ فَلْيَبْدَأْ بِالشِّمَالِ، وَلْيُنْعِلْهُمَا جَمِيعًا، أَوْ لِيَخْلَعْهُمَا جَمِيعًا

''जब कोई व्यक्ति जूता पहने तो पहले दाएं पांव में पहने और जब जूता उतारे तो पहले बायां पांव से उतारे। या तो दोनों जूते पहन कर रहे या फिर दोनों को उतार दे। (मुत्तफ़क़ अलैह 5495, 5855)

हदीस में एक जूता पहन कर चलने की मनाही भी आयी है।

3. मुसलमान के लिए यह भी सुन्नत है कि वह अपने कपड़े और जिस्म को साफ़ सुथरा रखे और इन दोनों की पाकी का भी आयोजन करे। इसके लिए हर प्रकार का सिंगार व खुश मन्द होने की बुनियाद सफ़ाई सुथराई है। इस्लाम ने सफाई सुथराई का आयोजन करने और जिस्म व लिबास को साफ़ रखने की तर्गीब दी है। सफ़ेद कपड़े पहना मुसतहब है इसकी दलील इब्ने अब्बास रजियल्लाहु अन्हुमा की रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

الْبَسُوا مِنْ ثِيَابِكُمُ الْبَيَاضَ فَإِنَّهَا مِنْ خَيْرِ ثِيَابِكُمْ، وَكَفِّنُوا فِيهَا مَوْتَاكُمْ

तुम लोग सफेद रंग के कपड़े पहनो, यह तुम्हारे कपड़ों में सबसे बेहतर है और अपने मुर्दों को सफ़ेद कपड़ों का कफन दिया करो।(अबु दाऊद 915) वैसे तमाम रंग जायज हैं। लबास और जायज़ श्रृंगार में सन्तुलन रखना चाहिए। अल्लाह का इर्शाद है وَالَّذِينَ إِذَا أَنْفَقُوا لَمْ يُسْرِفُوا وَلَمْ يَقْتُرُوا وَكَانَ بَيْنَ ذَلِكَ قَوَامًا

और जब वह (मोमिन) खर्च करते हैं तो न बेजा खर्च करते हैं और न कंजूसी, बल्कि इन दोनों के बीच सन्तुलित तरीक़े पर खर्च करते हैं। (सूरह अल फ़ुरक़ान आयत 67)

और सही बुखारी में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह इर्शाद मन्कूल है कि ''खाओ, पियो, पहनो और सदक़ा व खैरात करो और इन कामों में बेजा खर्च, गर्व व घमंड और दिखावा से बचो।